ISSN - 2231-1130
वर्ष–सप्तम् ; सितम्बर–2016

भविष्य का हिन्दी जनसंचार

मणिकान्त पाण्डेय*

संचार और जनसंचार– संचार अंग्रेजी भाषी 'कम्यूनीकेशन' शब्द का हिन्दी पर्याय है जो मूलतः लैटिन भाषा के शब्द 'कम्यूनिस' (कॉमन) से बना है, जिसका अर्थ–विचार, सूचना, संदेश का संचरण या सप्रेशण है। इसके समकक्षी हिन्दी शब्द 'संवाद' और 'संप्रेषण' है। संचार का सर्वप्रथम रूप व्यक्ति स्तर पर अपने आपसे बाते करना है, पर संवाद में या स्वयं से नहीं हो सकता। इसके लिए कोई अन्य व्यक्ति अवश्य चाहिए। संचार के माध्यम से संवादकर्ता किसी सामने वाले व्यक्ति को स्वकथन, स्वविचार एवं स्वकीय अभिवृत्तियों का उल्लेख जनसमाज के सामने करने की प्रक्रिया अपनाता है। अतः 'स्व' से हटकर 'पर' के सामने कुछ करने की प्रक्रिया अपनाता है। अतः 'स्व' से हटकर पर के सामने विचार या संदेश रखकर उसकी प्रतिक्रिया तक में दूसरे व्यक्ति की भूमिका का महत्त्व व्यापक हो जाता है।

संचार के बिना 'जनसंचार' संभव नहीं है। संचार की आवश्यकता निरूपित करते हुए **डॉ0 विजय कुलश्रेष्ठ** कहते हैं कि– ''संचार दो व्यक्तियों के मध्य ऐसी वाणीगत एवं सांकेतिक प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत प्रश्नों, शंकाओं, विचारों और अपेक्षाओं का समाधान या सकारात्मक–नकारात्मक पक्षों का उद्घाटन होता है। इस प्रकार संचारक अपेक्षाओं की दशा में प्रापक इच्छा–अनिच्छा तथा अभिवृत्ति का संकेत भी करता है। दूसरे शब्दों में संचारक दश्रोपा (दर्शक–श्रोता–पाठक) वर्ग तक अपना मंतव्य पहुँचा कर अपने विचार भाव, सूचना एवं अभिकृति की भागीदारी करता है।'

संचार की अनेक विद्वानों द्वारा बहुत सी परिभाशाएँ दी जा चुकी हैं इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाशाएं इस प्रकार से हैं–

विल्वर श्राम– ''संचार लैटिन भाशा के कम्यूनिस शब्द से ग्रहण

* एम0फिल्, नेट/जे0आर0एफ0, के0 आर0 जी0 कॉलेज, जीवाजी, विश्वविद्यालय ग्वालियर (म0प्र0)।

किया गया है। जब हम संप्रेषित करते हैं तब हम अपनी सूचना, विचार और अभिवृत्ति की भागीदारी का प्रयास करते हैं।''

चार्ल्स ई0 आसगुड– ''यह एक प्रक्रिया हे जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति ऐसे सभी विचारों, तथ्यों, अनुभवों अथवा प्रमाणों का विनमय करते हैं। जिससे प्रत्येक व्यक्ति संदेश का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। वास्तव में यह संप्रेषक और प्रापक के बीच किसी संदेश अथवा संदेशों की शृंखला प्राप्त करने के लिए की गई सम्मिलित क्रिया है।''

लूमिक बेगल– ''संचार एक प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक व्यवस्था के द्वारा सूचना, निर्णय और निर्देश दिये जाते हैं और यह एक मार्ग है जिसमें ज्ञान विचारों और दृष्टिकोणों को निर्मित अथवा परिवर्तित किया जाता है।''

उक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि–

(क) अर्थ का संचार होता है।

(ख) सामाजिक मान्यताओं का संचरण होता है।

(ग) अनुभव बाँटना है।

अतः संचार एक गतिशील प्रक्रिया है, जो सम्बन्धों पर आधारित है। वह सम्बन्ध और व्यक्तियों को जोड़ने का एक बड़ा अधिकार है– एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से, एक व्यक्ति को एक समूह से, एक समूह को दूसरे से और एक देश से दूसरे देश से जोड़ने का काम भी संचार के आधार पर ही होता है।

संचार जीवन को परिपूर्ण बनाता है और जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। जब हम अकेले में सोचते हैं या जब हम अपने विचार दूसरों के सामने रखते हैं या परस्पर विचारों का आदान–प्रदान करते है तो निश्चित ही संचार होता है। किसी भी सामाजिक व्यवस्था में संचार के मुख्य कार्यों को निम्न प्रकार से पहचाना जा सकता है–

(1) सूचना / जानकारी

(2) सामाजीकरण

(3) प्रेरणा

(4) वाद–विवाद / परिचर्चा

(5) शिक्षा

(6) मनोरंजन

(7) एकीकरण

(8) सामूहिक सत्ता की अपेक्षा

(9) परिवर्तन

(10) नियंत्रण एवं निगरानी

संचार मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं–

(क) श्रव्य संचार– इस प्रकार के माध्यम से श्रवणेन्द्रियों का सर्वाधिक प्रयोग होता है। जिसमें श्रोता केवल संदेश सुन सकता है। इसके अन्तर्गत रेडियो, संगोष्ठी, गोष्ठी, नेताओं द्वारा दिये गये सार्वजनिक भाशण, लोकगीत, समूह संचार आदि आते हैं। इसका बड़ा लाभ यह है कि श्रोता का शिक्षित होना आवश्यक नहीं है।

(ख) दृश्य संचार– ऐसे माध्यम से श्रोता देखकर संदेश को समझ जाता है, उसे दृश्य संचार कहते हैं। दृश्य संचार में श्रोता नेत्रों का सर्वाधिक उपयोग करता है। वर्तमान में अधिकतर दृश्य सामग्री का उपयोग किया जा रहा है जो नगरों में चौराहों पर बड़े–बड़े होर्डिंग, दृश्य संचार के रूप में, मूर्ति द्वारा, मूक अभिनय, कठपुतली, कार्टून, शारीरिक क्रिया–कलाप, भाषा, कम्प्यूटर, इंटरनेट, फोटोग्राफ आदि आते हैं।

(ग) श्रव्य–दृश्य संचार– श्रव्य–दृश्य संचार माध्यम से श्रोता अपने नेत्रों और कानों का उपयोग करके संदेश प्राप्त करता है। ये माध्यम श्रोता को विश्वसनीय सूचनाएँ देने में सफल रहे हैं। इस प्रकार के माध्यमों में टेलीविजन, फिल्म, रंगमंच आदि आते हैं। आधुनिक युग में संचार के नवीन माध्यमों में संदेश देखा और सुना जा सकता है। उसके लिए उपग्रह, संचार, इंटरनेट आदि प्रणाली सुलभ है।

संचार का मनुष्य से जुड़ाव तो आदिम युग से ही रहा है क्योंकि

मनुष्य अपने विचारों का आदान–प्रदान कभी सांकेतिक रूप से तो कभी व्यवहारिक एवं श्रव्य दृश्य रूप में करता ही आया है, और जैसे–जैसे मनुश्य विकास की ओर बढ़ता गया उसके संचार में वृद्धि होती गई। सच्चे अर्थों में अगर संचार की बात की जाय तो आम जन का जुड़ाव साहित्य से, हिन्दी से आधुनिक रूप में हमें बड़े पैमाने पर दिखाई देता है। जिसमें प्रिन्ट मीडिया और टेलीविजन का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

हिन्दी साहित्य की बात करे तो आधुनिक युग में भारतेन्दु युग में 'साक्षात्कार', 'भेंटवार्ता', 'डायरी', 'पत्रिका आदि विधाओं का विकास हुआ। 'साक्षात्कार' समाचार का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। 'साक्षात्कार' लेना एक कला है। 'भेंटवार्ता' में कुशलता प्राप्त किये बिना कोई भी पत्रकार श्रेष्ठ पत्रकार नहीं बन सकता। किसी भी घटना की पूरी जानकारी सम्बन्ध पक्षों से बातचीत किये बिना नहीं मिल सकती।

रेडियों का आधुनिक युग में विकास होने पर रेडियों पर अनेक कवियों लेखकों की कहानियाँ, नाटक, जीवनी, उपन्यासों का रूपान्तरण किया जा चुका है। जिससे सुदूर गाँवों में मौजूद व्यक्तियों को इसके बारे में जानकारी तथा देश में क्रिया–कलाप घटनाओं आदि के बारे में जानकारी मिलती है, जो जन सामान्य की मुख्य धारा से कटा हुआ था। उसे भी अपनी सोच विचार अभिव्यक्ति करने में एक अहम भूमिका अदा करता है।

टेलीविजन के अविष्कार से जो साहित्य पहले सिर्फ मनोरंजन के लिए पढ़ा जाता था लेकिन वह साहित्य जो आम जन से कटा हुआ था। वह समाज के हर वर्ग के पास आसानी से पहुँच गया तथा नैतिकता, आदर्श, यथार्थ आदि मूल्यों को जन तक पहुँचाया।

टी0 वी0 पर प्रसारित किये जाने वाले कार्यक्रमों में धारावाहिकों के इतिहास में 'रामायण' और 'महाभारत' ने एक नए युग का सूत्रपात किया। यों 'बुनियाद' ने इसकी शुरूआत कर दी थी, किन्तु 'रामायण' और 'महाभारत' ने धारावाहिकों को स्थायी रूप से (बंबई) मुम्बई या फिल्मोद्योग से जोड़ दिया। बड़ी पूँजी, बड़ी योजना, बड़ी फिल्म कंपनियों और लम्बी अवधि तक चलने

वाला धारावाहिक मनोरंजन 'रामायण' और 'महाभारत' से ही शुरू हुआ।

इन धारावाहिकों ने न केवल अधिकाधिक विज्ञापन आकर्षित किये बल्कि अधिकाधिक दर्शक भी जुटाये। 'रामायण' ने लोकप्रियता में हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता की बराबरी की। 'महाभारत' ने उसे पीछे छोड़ दिया। उसने अखिल भारतीय स्तर पर दर्शकों का एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। यह हिन्दी फिल्मों एवं 'चित्रहार' के दर्शकों की संख्या के प्रतिशत को भी पीछे छोड़ गया। जहाँ साहित्यकार देवकीनन्दन खत्री द्वारा लिखित 'चन्द्रकान्ता' ने मनोरंजन के साथ–साथ अन्य गैर हिन्दी भाषी जनता को 'हिन्दी सीखने के लिए प्रेरित किया वही 'चन्द्रकान्ता' दूरदर्शन पर काफी लोकप्रिय रहा। इस प्रकार के साहित्य का निर्माण रंगमंच तथा टी0 वी0 के माध्यम से समाज में बार–बार प्रस्तुत किये जाते रहे। यही कारण है कि प्रसिद्ध आलोचक **रामस्वरूप चतुर्वेदी** ने कहा है कि– ''रामायण में हमारे समाज का आदर्श रूप तथा महाभारत में यथार्थ रूप मौजूद है।''

भारतेन्दु युग के बाद द्विवेदी युग में पत्रकारिता के क्षेत्र में 'सरस्वती' पत्रिका एक आधार स्तम्भ के रूप में अन्य पत्र–पत्रिकाओं का मार्गदर्शन करती रही और यही संचार हमारे देश के गुलामी के समय देश की आवाम का पथ प्रदर्शन और क्रान्ति का आह्वान करता रहा है।

संचार की भाषा में हिन्दी एक महत्त्वपूर्ण भाषा के रूप में उभरकर सामने आयी है। जिसने सम्पूर्ण देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में अपनी एक अलग पहचान बनायी है। यही कारण है कि हिन्दी आज विश्व में तीसरे स्थान पर बोली जाने वाली भाषा है। विदेशी कंपनियाँ अपने ब्राण्डों को या उत्पादन को बेचने के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं।

आज हिन्दी के माध्यम से ही सम्पूर्ण भारत का एक सूत्र में पिरोया जा रहा है। आज बड़े–बड़े नेता, अभिनेता अपनी विचार का बात को आम जन तक पहुँचाने के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग करते है क्योंकि इसे आसानी से जो समाज का अनपढ़ व्यक्ति है उसको भी बताया तथा समझाया जा सकता है।

आज कल टी0 वी0, रेडियो, इंटरनेट पर प्रसारित किये जाने वाले विज्ञापनों की भाशा अधिकांशतः हिन्दी ही होती है। कम्प्यूटर के आगमन से हम फेसबुक, ट्यूटर, यू0 ट्यूब, वाट्सएप, स्काइप आदि पर हम अपना विचार प्रतिक्रिया (फीडबैक) देकर अपनी समस्याओं विचारों को आम जन तक आसानी से पहुँचा देते हैं। जो आज से अर्थात् आधुनिक युग से पूर्व एक समस्या थी।

चर्चित उपन्यास 'तमस' के लेखक वरिष्ठ साहित्यकार **भीष्म साहनी** ने कहा था कि– ''भाषा स्वभावतः एक जोड़ने वाला माध्यम है। आंचालिक भाषाओं की अपनी एक अलग खुशबू है, अपना अलग एक महत्त्व है। अंग्रेजी शब्द ठूँसकर नहीं, हिन्दी को आंचलिक भाषाओं से जोड़कर ही समृद्ध और शक्तिशाली बनाया जा सकता है। शुद्ध भाषा के नाम पर थोपे जाने वाली गम्भीरता से हिन्दी का भारी नुकसान होता है।''

राष्ट्रीय ख्याति के समाजशात्री **पी0 सी0 जोशी** ने कहा है कि– '''प्रसार भारती बोर्ड में श्री राजेन्द्र यादव को छोड़कर और कोई ऐसा नहीं है, जिसका हिन्दी में कोई महत्त्वपूर्ण स्थान हो। सरकार हर क्षेत्र में स्वायत्तता की बात करती है, मगर आज तक कभी भी भाषायी स्वायत्तता की बात नहीं हुई। भाषायी स्वायत्तता के बगैर स्वतन्त्रता बेमानी है।''

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं भविष्य में हिन्दी जनसंचार का महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि विज्ञापन की भाषा अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी का प्रयोग जैसे 'ये दिल माँगे मोर', 'पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें', 'ठण्डा मतलब कोका–कोला' आदि के विज्ञापनों में हिन्दी का प्रयोग किया जाता है।

आज से पूर्व हिन्दी सिर्फ पढ़ने सीखने के लिए प्रयोग की जाती थी लेकिन आज हिन्दी रोजगारपरक हो गई हैं। यही कारण है कि आज हिन्दी पढ़ाने के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापक की जरूरत है। आज अन्तर्राष्ट्रीय विश्व हिन्दी साहित्य का सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। जिसमें सम्पूर्ण विश्व के प्रसिद्ध विद्वानों को बुलाया जाता है तथा जो

हिन्दी के प्रसार–प्रचार को आगे पढ़ाने में अहम भूमिका अदा करते है।

इसलिए हम कह सकते हैं कि हिन्दी का संचार के रूप में प्रयोग भविष्य में कारगर साबित होगा और दिन प्रतिदिन इसकी उपादेयता आगे बढ़ती ही रहेगी।

भविष्य में हिन्दी संचार के माध्यम से एक प्रतिनिधि हथियार के रूप में है। जिसकी अपनी अज्ञान रूपी बंजर जमीन पर लहलहाते हुए फसल रूपी संचार आम जन की खुशहाली का प्रतीक है।

सन्दर्भ –

1. संचार माध्यम तकनीक और लेखन–डॉ0 विजय कुलश्रेष्ठ, श्याम प्रकाशन, जयपुर।
2. दूरदर्शन दशा और दिशा, सुधीश पचौरी, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण पंत्रालय भारत सरकार।
3. रेडियो समाचार, राम सागर शुक्ल, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
4. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1, 2002।
5. न्यू मिडिया इण्टरनेट की भाषायी चुनौतियां और सम्भावनाएँ, सम्पादक आर0 अनुराधा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 2012।
6. ग्लोबल मीडिया और हिन्दी पत्रकारिता सम्पादक डॉ0 हरीश अरोरा साहित्य संचय प्रकाशन, नई दिल्ली 2013।